Consolidated Coverage Report

Press Release: NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities

Faculty: Dr. Ramakrishna Biswal
Disseminated on: 10th July 2025

Consolidated Coverage (Pre-event)

Print

12th July 2025	Dainik Jagran (Clip attached)	New Delhi	14	Stress management is necessary for caregivers in disabled services	Hindi	NA	Dr. Ramakrishna Biswal

Stress management is necessary for caregivers in disabled services

दिव्यांग सेवाओं में तीमारदारों के लिए तनाव प्रबंधन जरूरी

नई दिल्ली, आइएएनएस : दिव्यांगता स्वीकार करने के लिए जितनी संजीदगी की जरूरत होती है, उतना ही सधा रवैया उनके माता-पिता या देखभाल करने वालों को अपनाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कई बार उन्हें ऐसे तनाव का भी सामना करना पड़ता है जो उनके शारीरिक, मानसिक और वित्तीय स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। यह निष्कर्ष एनआइटी राउरकेला के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में सामने आया है।

एशिया पैसिफिक जर्नल आफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट में प्रकाशित इस अध्ययन में यह जांचा गया कि देखभाल की निरंतर मांगें माता-पिता के शारीरिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती हैं जो अंततः उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। इस दौरान टीम ने आटिज्म, एडीएचडी, सेरेब्रल पाल्सी और कई विकारों वाले बच्चों के 400 माता-पिता का सर्वेक्षण किया। अध्ययन के बाद शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि विकासात्मक विकारों जैसे आटिज्म और एडीएचडी वाले बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता या देखभाल करने वालों को उचित समर्थन प्रणाली प्रदान की जानी चाहिए। जिसके उन्हें काफी मानसिक लाभ मिलेगा।

- **माता-पिता या देखभाल करने वालों को अक्सर ऐसे तनाव का सामना करना पड़ता है जो उनके शारीरिक, मानसिक और वित्तीय स्वास्थ्य पर डालता है प्रभाव**
- **राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान राउरकेला के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में सामने आया यह तथ्य**

प्रतीकात्मक

शारीरिक समस्याएं आई सामने

शोधकर्ताओं के मुताबिक, विकासात्मक विकारों वाले बच्चों की परवरिश करना अद्वितीय और अक्सर जीवनभर की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अध्ययन में सामने आया कि इसमें कई तरह व्यावहारिक और संवेदी कठिनाइयां आती हैं जिनका हल न मिलने से देखभाल करने वाली ज्यादातर मांओं में गहरी भावनात्मक थकान, सिर दर्द, अल्सर, पुराने दर्द जैसे शारीरिक लक्षण देखने को मिले। इसके अलावा शोधकर्ताओं ने समुदाय आधारित "वन-स्टाप" समर्थन केंद्रों की भी वकालत की जहां परिवार एक ही स्थान पर चिकित्सा, मानसिक स्वास्थ्य और वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकें।

बच्चों की देखभाल समाज की साझा जिम्मेदारी

एनआइटी राउरकेला के सहयोगी प्रोफेसर डा. रामकृष्ण बिस्वाल ने कहा, "दिव्यांग अधिकारों को सही रूप से मान्यता दी गई है फिर भी देखभाल करने वालों अक्सर अनदेखे रह जाते हैं। विकासात्मक विकारों वाले बच्चे की देखभाल केवल माता-पिता की जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिए, यह परिवार, पड़ोसियों और समाज की साझा जिम्मेदारी है।" उन्होंने कहा कि भारत में ये चुनौतियां अक्सर सामाजिक कलंक, जागरूकता की कमी और विशेष देखभाल तक सीमित पहुंच के कारण बढ़ जाती हैं। कई माता-पिता अपने समुदायों से अलग-थलग महसूस करते हैं और संयुक्त परिवार से समर्थन प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। ऐसी स्थिति में एक साझा मंच देखभाल करने वाले माता-पिता या ऐसे लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सहायक साबित हो सकता है।

14th July 2025	Navbharat Times (Clip attached)	New Delhi	12	दूसरों पर निर्भर स्पेशल बच्चों के पैरंट्स को घेर रही बीमारीः स्टडी	Hindi	Bhupendra Sharma	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

दूसरों पर निर्भर स्पेशल बच्चों के पैरंट्स को घेर रही बीमारीः स्टडी

https://navbharattimes.indiatimes.com/india/parents-of-special-children-who-dependent-on-others-facing-illness-nit-rourkela-study/articleshow/122430123.cms

दूसरों पर निर्भर स्पेशल बच्चों के पैरंट्स को घेर रही बीमारीः स्टडी

Bhupender.Sharma
@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली :** जिन बच्चों में मानसिक-शारीरिक विकास सामान्य बच्चों की तुलना में धीमा या असामान्य होता है, उनकी परवरिश करने वाले पैरंट्स पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव की समीक्षा के लिए एक स्टडी की गई है। NIT राउरकेला के ह्यूमैनिटीज और सोशल साइंस विभाग के असोसिएट प्रोफेसर डॉ. रामकृष्ण बिस्वाल और उनके रिसर्चर अभिजीत पाठक ने इन अनुभवों को समझने के लिए ऐसे 400 माता-पिता का सर्वेक्षण किया। इनके बच्चे ऑटिज्म, अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी जैसी समस्याओं से ग्रस्त थे। स्टडी में सामने आया है कि माता-पिता, खासकर मां भावनात्मक तौर पर थक जाती हैं। उन्हें सिरदर्द, अल्सर, क्रॉनिक दर्द और थकान जैसी अन्य समस्याएं रहती हैं क्योंकि अक्सर वे ही देखभाल की बड़ी जिम्मेदारियां संभालती हैं।

20-20 साल से सामाजिक कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं ले पाते: प्रो. बिस्वाल बताते हैं कि स्टडी में ऐसे मामले में भी सामने आए कि मां ने अपने बच्चे की देखभाल के लिए 20-20 वर्षों से किसी सामाजिक फंक्शन, शादी या किसी कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लिया। यह मां के भी शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। यह रिसर्च एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ सोशल वर्क एंड डिवेलपमेंट में प्रकाशित हुआ है। विकासात्मक समस्याओं वाले बच्चों का पालन-पोषण करना एक विशेष और अक्सर जीवनभर चलने वाली चुनौती होती है। इसका परिणाम गहरी भावनात्मक थकावट और सिरदर्द, अल्सर, लगातार दर्द और थकान जैसे शारीरिक लक्षणों के रूप में होता है। यह विशेष रूप से माताओं में ज्यादा देखा जाता है।

■ ***NIT*** *राउरकेला के एक्सपर्ट्स ने 400 पैरंट्स का सर्वे किया*

■ *मांओं में सिरदर्द, अल्सर और थकान समेत कई समस्याएं दिखी*

AI Image

क्या सिफारिशें की गईं?

- *बच्चों की देखभाल करने वाले पैरंट्स की स्वास्थ्य जांच और तनाव प्रबंधन भी तय किया जाना चाहिए।*
- *समुदाय-आधारित 'वन-स्टॉप' सहायता केंद्र बनाए जाने चाहिए*
- *इन केंद्रों पर प्रभावित परिवारों को चिकित्सा, मानसिक स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय सहायता मिल सके।*
- *NGO और दूसरी संस्थाओ को सरकार की ओर से मदद मिले और ऐसे परिवारों तक मदद पहुंचे।*

माता-पिता के अनुभवों को जाना

रिसर्च के दौरान टीम ने ऐसे 400 माता-पिता के अनुभवो को जाना, जिनके बच्चे किसी न किसी डिसऑर्डर से पीड़ित थे। NIT राउरकेला की रिसर्च टीम ने यह पता लगाया कि माता-पिता के शरीर, मनोदशा और रिश्तो पर इस तनाव से होने वाले प्रभाव में उनके शारीरिक स्वास्थ्य की अहम भूमिका है। प्रो. बिस्वाल ने कहा, 'दिव्यांगो के अधिकारो को सही रूप से मान्यता दी गई है, लेकिन ऐसे लोगो की देखभाल करने वालो के अमूल्य योगदान की अक्सर अनदेखी हो जाती है। यह परिवार के अन्य लोगों, पड़ोसियो और पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है।'

14th July 2025	News Wallet (Clip attached)	National	9	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	Lalit Verma	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities

NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities

–Lalilt Verma–

ROURKELA, 10th July 2025: National Institute of Technology (NIT) Rourkela Research team including Dr. Ramakrishna Biswal, Associate Professor, Department of Humanities & Social Sciences, along with his senior research scholar Mr. Abhijit Pathak, have reviewed how parenting a child with developmental disabilities negatively impacts the well-being of the parents. The study, published in the Asia Pacific Journal of Social Work and Development, investigates how the continuous demands of caregiving impacts parent's physical health, ultimately affecting their overall quality of life. Raising a child with developmental disabilities presents unique and often lifelong challenges. From teaching basic self-care to managing behavioural and sensory difficulties, parents face different situations that others may never experience. This results in deep emotional exhaustion and physical symptoms such as headaches, ulcers, chronic pain, and fatigue, particularly among mothers, who often handle major part of caregiving responsibilities. Over time, these physical ailments further reduce their ability to cope. To understand these experiences, the researchers surveyed 400 parents of children with conditions like autism, attention deficit hyperactivity disorder (ADHD), cerebral palsy, and multiple disabilities. By using culturally adapted tools and advanced statistical techniques, the NIT Rourkela team found that a parent's physical health plays a key role in shaping how stress impacts their body, mood, and relationships. Speaking about the key findings of the research, Dr. Ramakrishna Biswal, said, "Disability rights are rightly acknowledged, yet the invaluable contributions of caregivers often remain in the shadows. Caring for a child with developmental disabilities should not rest solely on parents, it is a shared responsibility of family, neighbors, and society. Caregiving is a demanding journey, but with non-judgmental support and wholehearted cooperation from trusted individuals and communities, caregivers can find strength, relief, and validation. Let us recognize their rights and ensure they, too, enjoy a life of dignity and fulfillment."

Dr. Ramakrishna Biswal, Associate Professor, Department of Humanities & Social Sciences, NIT Rourkela

Mr. Abhijit Pathak, Senior Research Scholar, NIT Rourkela

In India, these challenges are often intensified by social stigma, lack of awareness, and limited access to specialised care. Many parents feel isolated from their communities and are unable to receive support from extended family. Healthcare, therapy, and respite services remain limited in many regions. The study found that while physical health partly explains how stress affects parents' health, it does not account for challenges such as financial strain. The researchers used the biopsychosocial model, which considers health to be shared by the complex interaction between physical, psychological, and social forces. This model enables the researchers in recording the interrelated effects of stress and how physical health operates both due to stress and as a factor that deepens its impact. The researchers recommend integrating caregiver health screening and stress management into paediatric disability services. They also advocate for community-based "one-stop" support centres where families can access medical, mental health, and financial support in one place. At its core, the study is a reminder that supporting a child with developmental disabilities means supporting the entire family. When caregivers are overwhelmed, isolated, and physically unwell, the child's care suffers too. But with the right systems, including affordable healthcare, inclusive communities, and targeted mental health support, these families can be empowered to thrive.

11th July 2025	Pratigya (Clip attached)	Bhubaneswar	NA	ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମ ପିଲାମାନଙ୍କର ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଣାଳୀ ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷଣା	Odia	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମ ପିଲାମାନଙ୍କର ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଣାଳୀ ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷଣା

ପ୍ରତିଜ୍ଞା
ଶୁକ୍ରବାର, ୧୧ ଜୁଲାଇ ୨୦୨୫, ଭୁ
ରାଜ୍ୟ ଖବ

ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମ ପିଲାମାନଙ୍କର ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଣାଳୀ ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷଣା

ରାଉରକେଲା,୧୦।୦୭(ପ୍ରତିଜ୍ଞା ନ୍ୟୁଜ୍): ଜାତୀୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ (ଏନଆଇଟି) ରାଉରକେଲାର ମାନବୀୟ ଓ ସାମାଜିକ ବିଭାଗର ସହଯୋଗୀ ପ୍ରଫେସର ଡକ୍ଟର ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ ଏବଂ ତାଙ୍କର ବରିଷ୍ଠ ଗବେଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଅଭିଜିତ ପାଠକଙ୍କ ସମେତ ଗବେଷଣା ଦଳ ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାର ଲାଳନପାଳନ କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ମଙ୍ଗଳ ଉପରେ ନକାରାତ୍ମକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ ତାହା ସମୀକ୍ଷା କରିଛନ୍ତି । ଏସିଆ ପାସିଫିକ୍ ଜର୍ଣ୍ଣାଲ ଅଫ୍ ସୋସିଆଲ ୱାର୍କ ଆଣ୍ଡ ଡେଭଲପମେଂଟରେ ପ୍ରକାଶିତ ଏହି ଅଧ୍ୟୟନରେ ଯତ୍ନର ନିରନ୍ତର ଚାହିଦା କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ଜୀବନର ସାମଗ୍ରିକ ଗୁଣବତା ଉପରେ ପ୍ରଭାବ ପକାଏ, ତାହା ଉପରେ ଅନୁସନ୍ଧାନ କରାଯାଇଛି । ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାଟିର ଲାଳନପାଳନ କରିବା ଅନନ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରାୟତଃ ଜୀବନବ୍ୟାପୀ ଏକ ଚ୍ୟାଲେଞ୍ଜ ସୃଷ୍ଟି କରେ । ମୌଳିକ ଆତ୍ମ-ଯତ୍ନ ଶିଖାଇବାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଆଚାରଣଗତ ଓ ଇନ୍ଦ୍ରିୟଗତ ଅସୁବିଧାଗୁଡ଼ିକୁ ପରିଚାଳନା କରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ପିତାମାତାମାନେ ବିଭିନ୍ନ ପରିସ୍ଥିତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୁଅନ୍ତି, ଯାହା ଅନ୍ୟମାନେ କେବେ ଅନୁଭବ କରିପାରନ୍ତି ନାହିଁ । ଏହା ଗଭୀର ଭାବପ୍ରବଣ କ୍ଲାନ୍ତି ଓ ମୁଣ୍ଡବିନ୍ଧା, ପେଟ ଘାଆ, ଦୀର୍ଘକାଳୀନ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଏବଂ ଅକ୍ଲାପଣ ଭଳି ଶାରୀରିକ ଲକ୍ଷଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ, ବିଶେଷ କରି ମାଆମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଯେଉଁମାନେ ପ୍ରାୟତଃ ଯତ୍ନ ନେବାର ପ୍ରମୁଖ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାନ୍ତି । ସମୟ ସହିତ, ଏହି ଶାରୀରିକ ରୋଗଗୁଡ଼ିକ ସେମାନଙ୍କର ଯତ୍ନ ନେବାର କ୍ଷମତାକୁ ଆହୁରି ହ୍ରାସ କରେ । ଏହି ଅଭିଜ୍ଞତାଗୁଡ଼ିକୁ ବୁଝିବା ପାଇଁ, ଗବେଷକମାନେ ଅଟିଜିମ୍, ଆଟେନ୍‌ସନ୍ ଡେଫିସିଟ୍ ହାଇପରଆକ୍ଟିଭିଟି ଡିସ୍‌ଅର୍ଡ଼ର (ଏଡିଏଚ୍‌ଡି), ସେରେବ୍ରାଲ ପାଲ୍ସି ଓ ବହୁବିଧ ଅକ୍ଷମତା ଭଳି ରୋଗରେ ପୀଡ଼ିତ ପିଲାମାନଙ୍କର ଚାରିଶହ ପିତାମାତାଙ୍କୁ ସର୍ଭେ କରିଥିଲେ । ସାଂସ୍କୃତିକ ଭାବରେ ଅନୁକୂଳିତ ଉପକରଣ ଓ ଉନ୍ନତ ପରିସଂଖ୍ୟାନ କୌଶଳ ବ୍ୟବହାର କରି, ଏନଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷକ ଦଳ ଜାଣିପାରିଲେ ଯେ, ଜଣେ ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସେମାନଙ୍କ ଶରୀର, ମନୋଭାବ ଓ ସମ୍ପର୍କକୁ କିପରି ଭାବରେ ପ୍ରଭାବିତ କରେ । ଗବେଷଣାର ପ୍ରମୁଖ ନିଷ୍କର୍ଷ ବିଷୟରେ ଡକ୍ଟର ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ କହିଛନ୍ତି ଯେ, "ଅକ୍ଷମତା ଅଧିକାରକୁ ସଠିକ ଭାବରେ ସ୍ୱୀକାର କରାଯାଇଛି, ତଥାପି ଯତ୍ନ ନେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ଅମୂଲ୍ୟ ଅବଦାନ ପ୍ରାୟତଃ ଅନ୍ଧାରରେ ରହିଯାଏ । ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ଶିଶୁର ଯତ୍ନ ନେବା କେବଳ ପିତାମାତାଙ୍କ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରିବା ଉଚିତ ନୁହେଁ, ଏହା ପରିବାର, ପଡୋଶୀ ଓ ସମାଜର ଏକ ମିଳିତ ଦାୟିତ୍ୱ ଅଟେ । ଯତ୍ନ ନେବା ଏକ ଦାବିପୂର୍ଣ୍ଣ ଯାତ୍ରା, କିନ୍ତୁ ନିଃସର୍ତ୍ତ ତଥା ନିରପେକ୍ଷ ସମର୍ଥନ ଓ ବିଶ୍ୱସ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି ତଥା କମ୍ୟୁନିଟିର ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ସହିତ, ଯତ୍ନ ନେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ଶକ୍ତି, ଆଶ୍ୱସ୍ତି ଓ ବୈଧତା ପାଇପାରିବେ । ଆସନ୍ତୁ ସେମାନଙ୍କ ଅଧିକାରକୁ ଚିହ୍ନିବା ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ପାଇଁ ସମ୍ମାନ ଓ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତାର ଜୀବନ ଉପଭୋଗ କରିବା ନିଶ୍ଚିତ କରିବା" । ଭାରତରେ, ସାମାଜିକ କଳଙ୍କ, ସଚେତନତାର ଅଭାବ ଏବଂ ବିଶେଷଜ୍ଞ ଯତ୍ନର ସୀମିତ ପ୍ରବେଶ ଦ୍ୱାରା ଏହି ଚ୍ୟାଲେଞ୍ଜଗୁଡ଼ିକ ପ୍ରାୟତଃ ତୀବ୍ରତର ହୋଇଥାଏ । ଅନେକ ପିତାମାତା ସେମାନଙ୍କ କମ୍ୟୁନିଟିରୁ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି ଏବଂ ପରିବାରରୁ ସମର୍ଥନ ପାଇପାରନ୍ତି ନାହିଁ । ଅନେକ ଅଂଚଳରେ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟସେବା, ଚିକିତ୍ସା ଓ ବିଶ୍ରାମ ସେବା ସୀମିତ ରହିଛି । ଅଧ୍ୟୟନରୁ ଜଣାପଡ଼ିଛି ଯେ,ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଆଂଶିକ ଭାବରେ ବ୍ୟାଖ୍ୟାକରେ ଯେ, ଚାପ କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରେ, ଏହା ଆର୍ଥିକ ଚାପ ଭଳି ଚ୍ୟାଲେଞ୍ଜକୁ ହିସାବ କରିନାହିଁ । ଗବେଷକମାନେ ବାୟୋସାଇକୋସୋସିଆଲ ମଡେଲ ବ୍ୟବହାର କରିଥିଲେ, ଯାହା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଓ ସାମାଜିକ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟରେ ଜଟିଳ ପାରସ୍ପରିକ କ୍ରିୟା ଦ୍ୱାରା ଅଂଶୀଦାର ବୋଲି ବିବେଚନା କରେ । ଏହି ମଡେଲ ଗବେଷକମାନଙ୍କୁ ଚାପର ପରସ୍ପର ସମ୍ବନ୍ଧିତ ପ୍ରଭାବ ଓ ଚାପ ଯୋଗୁଁ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରଭାବକୁ ଗଭୀର କରୁଥିବା ଏକ କାରକ ଭାବରେ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ କିପରି କାର୍ଯ୍ୟକରେ ତାହା ରେକର୍ଡ଼ କରିବାରେ ସକ୍ଷମ । ଗବେଷକମାନେ ଶିଶୁ ଅକ୍ଷମତା ସେବାରେ ଯତ୍ନବାନ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସ୍କ୍ରିନିଂ ଏବଂ ଚାପ ପରିଚାଳନାକୁ ଏକୀକୃତ କରିବାକୁ ସୁପାରିଶ କରନ୍ତି । ସେମାନେ କମ୍ୟୁନିଟି-ଭିତ୍ତିକ "ୱାନ୍-ଷ୍ଟପ୍" ସହାୟତା କେନ୍ଦ୍ର ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥନ କରନ୍ତି ଯେଉଁଠାରେ ପରିବାରଗୁଡ଼ିକ ଗୋଟିଏ ସ୍ଥାନରେ ଚିକିତ୍ସା, ମାନସିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଓ ଆର୍ଥିକ ସହାୟତା ପାରିପାରିବେ । ମୂଳତଃ, ଏହି ଅଧ୍ୟୟନ ମନେପକାଇଦିଏ ଯେ, ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାକୁ ସମର୍ଥନ କରିବା ଅର୍ଥ ସମଗ୍ର ପରିବାରକୁ ସମର୍ଥନ କରିବା । ଯେତେବେଳେ ଯତ୍ନ ନେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ଭାରାକ୍ରାନ୍ତ, ଏକାକୀ ଓ ଶାରୀରିକ ଭାବରେ ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇଯାଆନ୍ତି, ସେତେବେଳେ ପିଲାର ଯତ୍ନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଭାବିତ ହୁଏ । କିନ୍ତୁ ସୁଲଭ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟସେବା, ସମାବେଶୀ-ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ଏବଂ ଲକ୍ଷଭେଦୀ ମାନସିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସହାୟତା ସମେତ ସଠିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ସହିତ ଏହି ପରିବାରଗୁଡ଼ିକୁ ଉନ୍ନତ ପାଇଁ ସଶକ୍ତ କରାଯାଇପାରିବ ।

Dr. Ramakrishna Biswal, Associate Professor, Department of Humanities & Social Sciences, NIT Rourkela

Mr. Abhijit Pathak, Senior Research Scholar, NIT Rourkela

17th July 2025	Political & Industrial Times of Orissa (Clip attached)	Bhubaneswar	3	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities

3 POLITICAL AND INDUSTRIAL TIMES OF ORISSA STATE TIMES Bhubaneswar, Thursday, 17th. July, 2025

NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities

ROURKELA, 16/07 (EWMS): National Institute of Technology (NIT) Rourkela Research team including Dr. Ramakrishna Biswal, Associate Professor, Department of Humanities & Social Sciences, along with his senior research scholar Mr. Abhijit Pathak, have reviewed how parenting a child with developmental disabilities impacts the well-being of the parents. The study, published in the Asia Pacific Journal of Social Work and Development, investigates how the continuous demands of caregiving impacts parent's physical health, ultimately affecting their overall quality of life. Raising a child with developmental disabilities presents unique and often lifelong challenges. From teaching basic self-care to managing behavioural and sensory difficulties, parents face different situations that others may never experience. This results in deep emotional exhaustion and physical symptoms such as headaches, ulcers, chronic pain, and fatigue, particularly among mothers, who often handle major part of caregiving responsibilities. Over time, these physical ailments further reduce their ability to cope. To understand these experiences, the researchers surveyed 400 parents of children with conditions like autism, attention deficit hyperactivity disorder (ADHD), cerebral palsy, and multiple disabilities. By using culturally adapted tools and advanced statistical techniques, the NIT Rourkela team found that a parent's physical health plays a key role in shaping how stress impacts their body, mood, and relationships. Speaking about the key findings of the research, Dr. Ramakrishna Biswal, said, "Disability rights are rightly acknowledged, yet the invaluable contributions of caregivers often remain in the shadows. Caring for a child with developmental disabilities should not rest solely on parents, it is a shared responsibility of family, neighbors, and society. Caregiving is a demanding journey, but with non-judgmental support and wholehearted cooperation from trusted individuals and communities, caregivers can find strength, relief, and validation. Let us recognize their rights and ensure they, too, enjoy a life of dignity and fulfillment." In India, these challenges are often intensified by social stigma, lack of awareness, and limited access to specialised care. Many parents feel isolated from their communities and are unable to receive support from extended family. Healthcare, therapy, and respite services remain limited in many regions. The study found that while physical health partly explains how stress affects parents' health, it does not account for challenges such as financial strain. The researchers used the biopsychosocial model, which considers health to be shared by the complex interaction between physical, psychological, and social forces. This model enables the researchers in recording the interrelated effects of stress and how physical health operates both due to stress and as a factor that deepens its impact. The researchers recommend integrating caregiver health screening and stress management into paediatric disability services. They also advocate for community-based "one-stop" support centres where families can access medical, mental health, and financial support in one place. At its core, the study is a reminder that supporting a child with developmental disabilities means supporting the entire family. When caregivers are overwhelmed, isolated, and physically unwell, the child's care suffers too. But with the right systems, including affordable healthcare, inclusive communities, and targeted mental health support, these families can be empowered to thrive.

Dr. Ramakrishna Biswal, Associate Professor, Department of Humanities & Social Sciences, NIT Rourkela

Mr. Abhijit Pathak, Senior Research Scholar, NIT Rourkela

11th July 2025	Prabhat Khabar (Clip attached)	Bhubaneswar	4	विशेष बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता के योगदान की होती है अनदेखी	Hindi	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

विशेष बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता के योगदान की होती है अनदेखी

https://www.prabhatkhabar.com/state/odisha/work-of-nit-researchers-published-in-asia-pacific-journal

विशेष बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता के योगदान की होती है अनदेखी

एनआइटी

- विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों की परवरिश का उनके माता-पिता पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की
- एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट में प्रकाशित हुआ शोध

प्रतिनिधि, राउरकेला

डॉ रामकृष्ण बिस्वाल. अभिजीत पाठक.

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) राउरकेला के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ रामकृष्ण बिस्वाल और उनके वरिष्ठ शोधार्थी अभिजीत पाठक ने विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों की परवरिश का उनके माता-पिता पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की है. एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट में प्रकाशित यह शोध इस बात की जांच करता है कि ऐसे बच्चों की निरंतर देखभाल करते रहने का उनके माता-पिता के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है और अंततः यह उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता पर कैसे असर डालता हैं. परिणामस्वरूप माता-पिता, खासकर माताएं भावनात्मक तौर पर अंदर से थक जाती हैं. उन्हें सिरदर्द, अल्सर, क्रॉनिक दर्द और थकान जैसी अन्य समस्याएं रहती हैं, क्योंकि अक्सर माताएं ही देखभाल की बड़ी जिम्मेदारियां संभालती हैं. इन समस्याओं की वजह से वे देखभाल करने की क्षमता खोने लगती हैं. विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों का पालन-पोषण करना एक विशेष और अक्सर जीवनभर चलने वाली चुनौती होती है. बुनियादी आत्म-देखभाल सिखाने से लेकर व्यावहारिक और संवेदनशील समस्याओं को संभालने तक, माता-पिता ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, जिनका अनुभव अन्य लोग शायद कभी न करें. इन अनुभवों को समझने के लिए शोधकर्ताओं ने ऐसे 400 माता-पिता का सर्वेक्षण किया, जिनके बच्चे ऑटिज्म, अटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी), सेरेब्रल पाल्सी और बहु-विकलांगता जैसी समस्याओं से ग्रस्त थे. इसके लिए एनआइटी राउरकेला की रिसर्च टीम ने सांस्कृतिक रूप से अनुकूल उपकरणों और अत्याधुनिक सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके यह पता लगाया कि माता-पिता के शरीर, मनोदशा और रिश्तों पर इस तनाव से होने वाले प्रभाव में उनके शारीरिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका है.

शोध के प्रमुख निष्कर्षों के बारे में बताते हुए डॉ रामकृष्ण बिस्वाल ने कहा कि दिव्यांगों के अधिकारों को सही रूप से मान्यता दी गयी है, लेकिन ऐसे लोगों की देखभाल करने वालों के अमूल्य योगदान की अक्सर अनदेखी हो जाती है. शारीरिक-मानसिक विकास में अक्षम बच्चों के माता-पिता पर उनकी देखभाल का सारा भार पड़ना उचित नहीं है. यह परिवार के अन्य लोगों, पड़ोसियों और पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है. ऐसे बच्चों की देखभाल में हमेशा एक चुनौती बनी रहती है. लेकिन इस कठिन सफर में यदि भरोसे के लोगों और समुदायों का किसी पूर्वाग्रह के बिना समर्थन मिले, तो देखभाल करने वालों को शक्ति, राहत और उनके अथक प्रयास को मान्यता मिल सकती है. आइये हम उनके अधिकारों को मान्यता दें और यह सुनिश्चित करें कि उन्हें भी एक सम्मानजनक और संतोषप्रद जीवन का अनुभव मिले. भारत में यह चुनौतियां अधिक गंभीर हैं, जिसके समाज में हेय दृष्टि से देखा जाना, विशेष देखभाल के बारे में जानकारी की कमी और इस सुविधा का सीमित होना, जैसे कई कारण हैं. ऐसे में बहुत-से माता- पिता अपने समुदायों से अलग-थलग महसूस करते हैं और उन्हें विस्तृत परिवार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता है. आज बहुत-से क्षेत्रों में संबंधित स्वास्थ्य सेवा, चिकित्सा और राहत सेवाएं सीमित हैं.

माता-पिता की स्वास्थ्य जांच और तनाव प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना चाहिए : शोधकर्ता यह सुझाव देते हैं कि विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता की स्वास्थ्य जांच और तनाव प्रबंधन भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए. शोधकर्ता यह भी सुझाव देते हैं कि समुदाय-आधारित 'वन-स्टॉप' सहायता केंद्र बनाये जाने चाहिए, जहां प्रभावित परिवारों को एक जगह चिकित्सा, मानसिक स्वास्थ्य सेवा और वित्तीय सहायता मिल सके. इस अध्ययन का सार यह स्मरण दिलाना है कि शारीरिक-मानसिक विकास में असमर्थ बच्चों को समर्थन देने का अर्थ पूरे परिवार को सहायता देना है. यदि देखभाल करने वाले खुद परेशान, समाज से अलग-थलग और शारीरिक रूप से अस्वस्थ होंगे तो बच्चों की देखभाल प्रभावित होगी. हालांकि ऐसे परिवार सशक्त और खुशहाल हो सकते हैं, यदि उन्हें किफायती स्वास्थ्य सेवा, समुदाय में समावेश की भावना और लक्ष्य बना कर मानसिक स्वास्थ्य सेवा सहित उचित सहायता व्यवस्था मिले.

शोधकर्ताओं ने अध्ययन में बायोसाइकोसोशल मॉडल का किया उपयोग

अध्ययन में यह देखा गया कि शारीरिक स्वास्थ्य आंशिक रूप से ही यह बताता है कि देखभाल के तनाव से माता-पिता का स्वास्थ्य कैसे प्रभावित होता है, लेकिन इसमें आर्थिक तनाव जैसी चुनौतियों को शामिल नहीं किया गया है. अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बायोसाइकोसोशल मॉडल का उपयोग किया, जो यह मानता है कि स्वास्थ्य में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक शक्तियों के बीच जटिल परस्पर प्रक्रिया की साझेदारी है. यह मॉडल शोधकर्ताओं को तनाव के परस्पर संबंधित प्रभावों को समझने और यह जानने में सक्षम बनाता है कि किस तरह तनाव के कारण व इसके प्रभाव बढ़ाने वाले कारक के अनुसार शारीरिक स्वास्थ्य प्रक्रियाएं प्रभावित होती हैं.

11th July 2025	Dainik Jagran (Clip attached)	Bhubaneswar	5	विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों के माता-पिता के लिए सहयोग प्रणाली पर एनआइटी का शोध	Hindi	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों के माता-पिता के लिए सहयोग प्रणाली पर एनआइटी का शोध

सूर्य अस्त (आज) 06:38 उदय (कल) 05:14

राउरकेला जागरण

www.jagran.com दैनिक जागरण जमशेदपुर, 11 जुलाई, 2025 | 5

विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों के माता-पिता के लिए सहयोग प्रणाली पर एनआइटी का शोध

- एसोसिएट प्रोफेसर डा. रामकृष्ण बिस्वाल व वरिष्ठ शोधार्थी अभिजीत पाठक ने की समीक्षा
- एशिया पैसिफिक जर्नल आफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट में प्रकाशित हुआ है यह शोध

डा. रामकृष्ण बिस्वाल व वरिष्ठ शोधार्थी अभिजीत पाठक का फाइल फोटो।

400 माता-पिता का सर्वेक्षण किया जिनके बच्चे आटिज्म, अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसआर्डर, सेरेब्रल पाल्सी और बहु-विकलांगता जैसी समस्याओं से थे ग्रस्त

जासं, राउरकेला : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) राउरकेला के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. रामकृष्ण बिस्वाल और उनके वरिष्ठ शोधार्थी अभिजीत पाठक ने विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों की परवरिश का उनके माता-पिता पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की है। यह शोध एशिया पैसिफिक जर्नल आफ सोशल वर्क एंड डेवलपमेंट में प्रकाशित हुआ है, जो इस बात की जांच करता है कि ऐसे बच्चों की निरंतर देखभाल करते रहने का उनके माता-पिता के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है और अंततः यह उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता पर कैसे असर डालता है।

शोध के परिणामस्वरूप माता-पिता, विशेषकर माताएं, भावनात्मक तौर पर थक जाती हैं। उन्हें सिरदर्द, अल्सर, क्रानिक दर्द और थकान जैसी समस्याएं होती हैं, क्योंकि अक्सर माताएं ही देखभाल की बड़ी जिम्मेदारियां संभालती हैं। इन समस्याओं के कारण वे देखभाल करने की क्षमता खोने लगती हैं। विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों का पालन-पोषण एक विशेष और अक्सर जीवनभर चलने वाली चुनौती होती है। बुनियादी आत्म-देखभाल सिखाने से लेकर व्यवहारिक और संवेदनशील समस्याओं को संभालने तक माता-पिता ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जिनका अनुभव अन्य लोग शायद कभी न करें। इसका परिणाम गहरी भावनात्मक थकावट और सिरदर्द, अल्सर, लगातार दर्द और थकान जैसे शारीरिक लक्षणों के रूप में होता है। यह विशेष रूप से माताओं में अधिक देखा जाता है, जो अक्सर देखभाल की जिम्मेदारियों का बड़ा हिस्सा निभाती हैं। समय के साथ, यह शारीरिक समस्याएं उनकी सामना करने की क्षमता को और भी कम कर देती हैं।

इन अनुभवों को समझने के लिए शोधकर्ताओं ने ऐसे 400 माता-पिता का सर्वेक्षण किया जिनके बच्चे आटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसआर्डर और बहु-विकलांगता जैसी समस्याओं से ग्रस्त थे। एनआइटी राउरकेला की रिसर्च टीम ने सांस्कृतिक रूप से अनुकूल उपकरणों और अत्याधुनिक सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके यह पता लगाया कि माता-पिता के शरीर, मनोदशा और रिश्तों पर इस तनाव से होने वाले प्रभाव में उनके शारीरिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका है।

शोध के प्रमुख निष्कर्षों के बारे में बताते हुए डा. रामकृष्ण बिस्वाल ने कहा, ''विकलांगों के अधिकारों को सही रूप से मान्यता दी गई है, लेकिन ऐसे लोगों की देखभाल करने वालों के अमूल्य योगदान की अक्सर अनदेखी हो जाती है। शारीरिक-मानसिक विकास में अक्षम बच्चों के माता-पिता पर उनकी देखभाल का सारा भार पड़ना उचित नहीं है। यह परिवार के अन्य लोगों, पड़ोसियों और पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है। ऐसे बच्चों की देखभाल में हमेशा एक चुनौती बनी रहती है। लेकिन इस कठिन सफर में यदि भरोसे के लोगों और समुदायों का समर्थन मिले तो देखभाल करने वालों को शक्ति, राहत और उनके अथक प्रयास को मान्यता मिल सकती है। भारत में यह चुनौतियां अधिक गंभीर हैं, जिसमें समाज में हेय दृष्टि से देखा जाना, विशेष देखभाल के बारे में जानकारी की कमी और इस सुविधा का सीमित होना शामिल हैं। ऐसे में बहुत-से माता-पिता अपने समुदायों से अलग-थलग महसूस करते हैं और उन्हें विस्तृत परिवार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता है।

शोधकर्ता का सुझाव देते हैं कि विकासात्मक दिव्यांगता वाले बच्चों की देखभाल करने वाले माता-पिता की स्वास्थ्य जांच और तनाव प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, समुदाय-आधारित 'वन-स्टाप' सहायता केंद्र बनाए जाने चाहिए जहां प्रभावित परिवारों को चिकित्सा, मानसिक स्वास्थ्य सेवा और वित्तीय सहायता मिल सके।

11th July 2025	Dharitri (Clip attached)	Bhubaneswar	NA	ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍ଆଇଟିର ଗବେଷଣା ଗୃହ	Odia	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍ଆଇଟିର ଗବେଷଣା ଗୃହ

ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍ଆଇଟିର ଗବେଷଣା

ରାଉରକେଲା,୧୦।୭
(ସଙ୍ଗୀତା ଜେନା)

ଏନ୍ଆଇଟିର ଗବେଷକ ଦଳ।

ରାଉରକେଲାସ୍ଥିତ ଜାତୀୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ(ଏନ୍ଆଇଟି) ମାନବିକ ସାମାଜିକ ବିଜ୍ଞାନ ବିଭାଗର ସହଯୋଗୀ ପ୍ରଫେସର ଡ. ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ ଓ ଅଭିଜିତ ପାଠକଙ୍କ ସମେତ ଗବେଷକ ଦଳ ଅକ୍ଷମ ପିଲାମାନଙ୍କ ଲାଳନପାଳନ କିପରି ମାତାପିତାଙ୍କ ଉପରେ ନକାରାତ୍ମକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ ତାହା ଉପରେ ଗବେଷଣା କରିଛନ୍ତି। ଏସିଆ ପାସିଫିକ ଜର୍ନାଲ ଅଫ୍ ସୋସିଆଲ ୱାର୍କ ଆଣ୍ଡ ଡେଭଲପ୍‌ମେଣ୍ଟରେ ପ୍ରକାଶିତ ଏହି ଅଧ୍ୟୟନରେ ଯତ୍ନର ନିରନ୍ତର ଚାହିଦା କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରଭାବିତ କରେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ଜୀବନର ସାମଗ୍ରିକ ଗୁଣବତ୍ତା ଉପରେ ପ୍ରଭାବ ପକାଏ ତାହା ଉପରେ ଅନୁସନ୍ଧାନ କରାଯାଇଛି। ଅକ୍ଷମ ପିଲାମାନଙ୍କ ଲାଳନପାଳନରେ ମାତାପିତା ବିଭିନ୍ନ ଜଟିଳ ପରିସ୍ଥିତିରେ ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଥାନ୍ତି। ଗଭୀର ଭାବପ୍ରବଣ କ୍ଳାନ୍ତି, ମୁଣ୍ଡବିନ୍ଧା, ପେଟରେ ଘାଆ, ଦୀର୍ଘକାଳୀନ ଯନ୍ତ୍ରଣା, ଥକ୍କାପଣ ଭଳି ଶାରୀରିକ ଲକ୍ଷଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ। ବିଶେଷକରି ମା'ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଶାରୀରିକ ରୋଗଗୁଡ଼ିକ ସେମାନଙ୍କ ଯତ୍ନ ନେବାର କ୍ଷମତାକୁ ହ୍ରାସ କରିଥାଏ। ଏହି ଅଭିଜ୍ଞତାଗୁଡ଼ିକ ବୁଝିବା ପାଇଁ ଗବେଷକମାନେ ଅଟିଜମ୍, ଆଟେସସନ୍ ଡେଫିସିଟ୍ ହାଇପରଆକ୍ଟିଭିଟି ଡିସଅର୍ଡର(ଏଡ଼ିଏଚ୍‌ଡ଼ି), ସେରେବ୍ରାଲ ପାଲ୍ସି ଓ ବହୁବିଧ ଅକ୍ଷମତା ଭଳି ରୋଗରେ ପୀଡ଼ିତ ପିଲାମାନଙ୍କ ୪ଶହ ପିତାମାତାଙ୍କ ଉପରେ ସର୍ଭେ କରାଯାଇଥିଲା। ଉକ୍ତ ଗବେଷଣାକୁ ନେଇ ଡ. ବିଶ୍ୱାଳ କହିଛନ୍ତି, ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ଶିଶୁର ଯତ୍ନ କେବଳ ଅଭିଭାବକମାନଙ୍କ ନୁହେଁ ବରଂ ପରିବାର ଓ ପଡୋଶୀ ତଥା ସମାଜର ଏକ ମିଳିତ ଦାୟିତ୍ୱ। ଏଭଳି ଅନେକ ମାତାପିତା ସମାଜରୁ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ଅନୁଭବ କରିଥାନ୍ତି। ସେମାନେ ପରିବାର ଓ ଅନ୍ୟଠାରୁ ସହଯୋଗ ପାଇ ପାରି ନ ଥାନ୍ତି। ଗବେଷକମାନେ ବାୟୋସାଇକୋସୋସିଆଲ୍ ମଡେଲ ବ୍ୟବହାର କରିଥିଲେ, ଯାହାକି ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଓ ସାମାଜିକ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟରେ ଜଟିଳ ପାରସ୍ପରିକ କ୍ରିୟା ଦ୍ୱାରା ଅଂଶୀଦାର ବୋଲି ବିବେଚନା କରିଥିଲା। ମଡେଲ ଦ୍ୱାରା ଚାପ ରେକର୍ଡ କରାଯିବା ସକ୍ଷମ ହୋଇଥାଏ। କମ୍ୟୁନିଟି ଭିତ୍ତିକ 'ୱାନ୍ ଷ୍ଟପ୍ ସହାୟତା କେନ୍ଦ୍ର ଦ୍ୱାରା ସମସ୍ୟା ଦୂରୀକରଣ ହେବ ବୋଲି ନିଷ୍କର୍ଷ ବାହାରିଥିଲା। ଯେଉଁଠାରେ ପରିବାର ଗୁଡ଼ିକ ଗୋଟିଏ ସ୍ଥାନରେ ଚିକିତ୍ସା, ମାନସିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଓ ଆର୍ଥିକ ସହାୟତା ପାଇପାରିବେ ବୋଲି ବିଶ୍ୱାଳ କହିଥିଲେ।

11th July 2025	Prameya (Clip attached)	Bhubaneswar	NA	ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟିର ଗବେଷଣା	Odia	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟିର ଗବେଷଣା

ଅକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ମାତାପିତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ପାଇଁ ଏନ୍‌ଆଇଟିର ଗବେଷଣା

ରାଉରକେଲା,୧୦।୭(ବ୍ୟୁରୋ): ଜାତୀୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ (ଏନ୍‌ଆଇଟି) ରାଉରକେଲାର ମାନବୀୟ ଓ ସାମାଜିକ ବିଜ୍ଞାନ ବିଭାଗର ସହଯୋଗୀ ପ୍ରଫେସର ଡ. ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ ଏବଂ ତାଙ୍କର ବରିଷ୍ଠ ଗବେଷକ ଅଭିଜିତ ପାଠକଙ୍କ ସମେତ ଗବେଷଣା ଦଳ ଶାରିରୀକ ବିକାଶଜନିତ ସମସ୍ୟାରୁ ଭିନ୍ନକ୍ଷମ ପିଲାଙ୍କ ଅଭିଭାବକଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଣାଳୀ ଯୋଗାଇବା ଲକ୍ଷ୍ୟରେ ଗବେଷଣା କରିଛନ୍ତି। ଏସିଆ ପାସିଫିକ୍ ଜର୍ଣ୍ଣାଲ୍ ଅଫ୍ ସୋସିଆଲ୍‌ୱାର୍କ ଆଣ୍ଡ ଡେଭଲପ୍‌ମେଣ୍ଟରେ ପ୍ରକାଶିତ ଏହି ଅଧ୍ୟୟନାନୁସାରେ ଯତ୍ନର ନିରନ୍ତର ଚାହିଦା କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ଜୀବନର ସାମଗ୍ରିକ ଗୁଣବତ୍ତା ଉପରେ ପ୍ରଭାବ ପକାଏ, ତାହା ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଅନୁସନ୍ଧାନ କରାଯାଇଛି।

ବିକାଶଜନିତ ସମସ୍ୟା ଭୋଗୁଥିବା ପିଲାଟିର ଲାଳନପାଳନ କରିବା ଅନନ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରାୟତଃ ଜୀବନବ୍ୟାପୀ ଏକ ଚ୍ୟାଲେଞ୍ଜ ସାଜିଥାଏ। ମୌଳିକ ଆତ୍ମ-ଯତ୍ନ ଶିଖାଇବାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଆଚରଣଗତ ଓ ଇନ୍ଦ୍ରିୟଗତ ଅସୁବିଧାଗୁଡ଼ିକୁ ପରିଚାଳନା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ପିତାମାତାମାନେ ବିଭିନ୍ନ ପରିସ୍ଥିତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୁଅନ୍ତି। ଏହା ଗଭୀର ଭାବପ୍ରବଣ କ୍ଲାନ୍ତି ଓ ମୁଣ୍ଡବିନ୍ଧା, ପେଟ ଘାଆ, ଦୀର୍ଘକାଳୀନ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଏବଂ ଅକ୍ଳାପଣ ଭଳି ଶାରୀରିକ ବିଲକ୍ଷଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ। ବିଶେଷକରି

ମାଆଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଏସବୁ ବେଶୀ ଦେଖାଯାଇଥାଏ; ଯେଉଁମାନେ ପ୍ରାୟତଃ ଯତ୍ନ ନେବାର ପ୍ରମୁଖ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାଇଥା'ନ୍ତି। ସମୟ ସହିତ, ଏହି ଶାରୀରିକ ରୋଗଗୁଡ଼ିକ ସେମାନଙ୍କର ଯତ୍ନ ନେବାର କ୍ଷମତା ଆହୁରି ହ୍ରାସ କରେ। ଏହି ଅଭିଜ୍ଞତାକୁ ବୁଝିବା ପାଇଁ ଗବେଷକମାନେ ଅଟିଜିମ୍, ଆଟେନ୍‌ସନ୍ ଡେଫିସିଟ୍ ହାଇପରଆକ୍ଟିଭିଟି ଡିସ୍‌ଅର୍ଡର୍ (ଏଡିଏଚ୍‌ଡି), ସେରେବ୍ରାଲ୍ ପଲ୍‌ସି ଓ ବହୁବିଧ ଅକ୍ଷମତା ଭଳି ରୋଗରେ ପୀଡ଼ିତ ପିଲାମାନଙ୍କର ୪୦୦ ପିତାମାତାଙ୍କୁ ନେଇ ଗବେଷଣା କରିଥିଲେ। ସାଂସ୍କୃତିକ ଭାବେ ଅନୁକୂଳିତ ଉପକରଣ ଓ ଉନ୍ନତ ପରିସଂଖ୍ୟାନ କୌଶଳ ବ୍ୟବହାର ପୂର୍ବକ ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷକ ଦଳ ଜାଣିପାରିଲେ ଯେ କୌଣସି ପିତାମାତାଙ୍କ ଭିନ୍ନ ଶାରୀରିକ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ସେମାନଙ୍କ ଶରୀର, ମନୋଭାବ ଓ ସମ୍ପର୍କକୁ କିପରି ଭାବେ ପ୍ରଭାବିତ କରେ।

ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ଶିଶୁର ଯତ୍ନ ସକାଶେ କେବଳ ପିତାମାତାଙ୍କ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରାଯିବା ଅନୁଚିତ; ଏଭଳି ସ୍ଥିତିରେ ପରିବାର, ପଡ଼ୋଶୀ ଓ ସମାଜର ଏକ ମିଳିତ ଦାୟିତ୍ୱ ରହିବା ଉଚିତ୍ ବୋଲି ଡ. ବିଶ୍ୱାଳ କହିଛନ୍ତି। ଗବେଷକମାନେ ଏଥିପାଇଁ ବାୟୋସାଇକୋ ସୋସିଆଲ୍ ମଡେଲ୍ ବ୍ୟବହାର କରିଥିଲେ। ଯାହା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଓ ସାମାଜିକ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟରେ ଜଟିଳ ପାରସ୍ପରିକ କ୍ରିୟା ଦ୍ୱାରା ଆଂଶୀଦାର ରୂପେ ବିବେଚନା କରେ। ଏହି ମଡେଲ୍ ଗବେଷକଙ୍କୁ ଚାପର ପରସ୍ପର ସମ୍ବନ୍ଧିତ ପ୍ରଭାବ ଓ ଚାପ ଯୋଗୁଁ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରଭାବକୁ ଗଭୀର କରୁଥିବା ଏକ କାରକ ଭାବେ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ କିପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରେ ତାହାକୁ ରେକର୍ଡ଼ କରିଛି।

11th July 2025	Sakala (Clip attached)	Bhubaneswar	NA	। ଏନ୍ଆଇଟି ଗବେଷକଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗଙ୍କ ଯତ୍ନ ସମ୍ପର୍କିତ ଗବେଷଣା	Odia	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

ଏନ୍ଆଇଟି ଗବେଷକଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗଙ୍କ ଯତ୍ନ ସମ୍ପର୍କିତ ଗବେଷଣା

ଏନ୍ଆଇଟି ଗବେଷକଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗଙ୍କ ଯତ୍ନ ସମ୍ପର୍କିତ ଗବେଷଣା

ରାଉରକେଲା, ୧୦।୭ (ସମିସ)

ଜାତୀୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ (ଏନ୍ଆଇଟି) ରାଉରକେଲା ପକ୍ଷରୁ ବିକାଶଜନିତ ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗଙ୍କ ଯତ୍ନ ସମ୍ପର୍କିତ ଗବେଷଣା ଆରମ୍ଭ ହୋଇଛି। ଏନ୍ଆଇଟିର ମାନବୀୟ ଓ ସାମାଜିକ ବିଜ୍ଞାନ ବିଭାଗର ସହଯୋଗୀ ପ୍ରଫେସର ଡକ୍ଟର ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ ଏବଂ ତାଙ୍କର ବରିଷ୍ଠ ଗବେଷକ ଅଭିଜିତ ପାଠକଙ୍କ ସମେତ ଗବେଷଣା ଦଳ ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାର ଲାଳନପାଳନ କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ମଙ୍ଗଳ ଉପରେ ନକାରାତ୍ମକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ ତାହା ଏହି ଗବେଷଣା ଦ୍ୱାରା ସମୀକ୍ଷା କରିଛନ୍ତି। ଏସିଆ ପାସିଫିକ୍ ଜର୍ଣ୍ଣାଲ୍ ଅଫ୍ ସୋସିଆଲ୍ ୱାର୍କ ଆଣ୍ଡ ଡେଭଲପ୍‌ମେଣ୍ଟରେ ପ୍ରକାଶିତ ଏହି ଅଧ୍ୟୟନରେ ଯତ୍ନର ନିରନ୍ତର ଚାହିଦା କିପରି ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ଜୀବନର ସାମଗ୍ରିକ ଗୁଣବତ୍ତା ଉପରେ ପ୍ରଭାବ ପକାଏ, ତାହା ଉପରେ ବିଶେଷ କରି ଏହି ଅନୁସନ୍ଧାନ କରାଯାଇଛି।

ସୂଚନାଯୋଗ୍ୟ ଯେ ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାଟିର ଲାଳନପାଳନ କରିବା ଅନନ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରାୟତଃ ଜୀବନବ୍ୟାପୀ ଏକ ଚ୍ୟାଲେଞ୍ଜ ସୃଷ୍ଟି କରେ। ମୌଳିକ ଆତ୍ମ-ଯତ୍ନ ଶିଖାଇବା ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଆଚରଣଗତ ଓ ଇନ୍ଦ୍ରିୟଗତ ଅସୁବିଧାଗୁଡ଼ିକୁ ପରିଚାଳନା କରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ପିତାମାତାମାନେ ବିଭିନ୍ନ ପରିସ୍ଥିତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୁଅନ୍ତି, ଯାହା ଅନ୍ୟମାନେ କେବେ ଅନୁଭବ କରିପାରନ୍ତି ନାହିଁ। ଏହା ଗଭୀର ଭାବପ୍ରବଣ କ୍ଳାନ୍ତି ଓ ମୁଣ୍ଡବିନ୍ଧା, ପେଟ ଘାଆ, ଦୀର୍ଘକାଳୀନ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଏବଂ ଅବସାଦ ଭଳି ଶାରୀରିକ ଲକ୍ଷଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ, ବିଶେଷକରି ମାଆମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ, ଯେଉଁମାନେ ପ୍ରାୟତଃ ଯତ୍ନ ନେବାର ପ୍ରମୁଖ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାନ୍ତି। ସମୟ ସହିତ, ଏହି ଶାରୀରିକ ରୋଗଗୁଡ଼ିକ ସେମାନଙ୍କର ଯତ୍ନ ନେବାର କ୍ଷମତାକୁ ଆହୁରି ହ୍ରାସ କରେ।

ସୂଚନାଯୋଗ୍ୟ ଯେ ଏହି ଅଭିଜ୍ଞତାଗୁଡ଼ିକୁ ବୁଝିବା ପାଇଁ ଗବେଷକମାନେ ଅଟିଜିମ୍, ଆଟେନ୍ସନ୍ ଡେଫିସିଟ୍ ହାଇପରଆକ୍ଟିଭିଟି ଡିସଅର୍ଡର୍ (ଏଡିଏଚ୍ଡି), ସେରେବ୍ରାଲ୍ ପାଲ୍ସି ଓ ବହୁବିଧ ଅକ୍ଷମତା ଭଳି ରୋଗରେ ପୀଡ଼ିତ ପିଲାମାନଙ୍କର ୪୦୦ ପିତାମାତାଙ୍କ ସର୍ଭେ କରିଥିଲେ। ସାଂସ୍କୃତିକ ଭାବରେ ଅନୁକୂଳିତ

ଉପକରଣ ଓ ଉନ୍ନତ ପରିସଂଖ୍ୟାନ କୌଶଳ ବ୍ୟବହାର କରି ଏନ୍ଆଇଟି ରାଉରକେଲାର ଗବେଷକ ଦଳ ଜାଣିପାରିଲେ ଯେ ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସେମାନଙ୍କ ଶରୀର, ମନୋଭାବ ଓ ସମ୍ପର୍କକୁ କିପରି ଭାବରେ ପ୍ରଭାବିତ କରେ।

ଗବେଷଣାର ପ୍ରମୁଖ ନିଷ୍କର୍ଷ ବିଷୟରେ ଡକ୍ଟର ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ କହିଛନ୍ତି, ବିକାଶଜନିତ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ଶିଶୁର ଯତ୍ନ ନେବା କେବଳ ପିତାମାତାଙ୍କ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରିବା ଉଚିତ ନୁହେଁ, ଏହା ପରିବାର, ପଡ଼ୋଶୀ ଓ ସମାଜର ଏକ ମିଳିତ ଦାୟିତ୍ୱ ଅଟେ। ଯତ୍ନ ନେବା ଏକ ଦାବିପୂର୍ଣ୍ଣ ଯାତ୍ରା, କିନ୍ତୁ ନିଃସର୍ତ୍ତ ତଥା ନିରପେକ୍ଷ ସମର୍ଥନ ଓ ବିଶ୍ୱସ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି ତଥା କମ୍ୟୁନିଟିର ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ସହିତ, ଯତ୍ନ ନେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ଶକ୍ତି ଆଶ୍ୱସ୍ତି ଓ ଧୈର୍ଯ୍ୟତା ପାଇପାରିବେ। ଗବେଷକମାନେ ବାୟୋସାଇକୋସୋସିଆଲ୍ ମଡେଲ୍ ବ୍ୟବହାର କରିଥିଲେ। ଯାହା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଓ ସାମାଜିକ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟରେ ଜଟିଳ ପାରସ୍ପରିକ କ୍ରିୟା ଦ୍ୱାରା ଅଂଶୀଦାର ବୋଲି ବିବେଚନା କରେ। ଏହି ମଡେଲ୍ ଗବେଷକଙ୍କୁ ଚାପର ପରସ୍ପର ସମ୍ବନ୍ଧିତ ପ୍ରଭାବ ଓ ଚାପ ଯୋଗୁଁ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରଭାବକୁ ଗଭୀର କରୁଥିବା ଏକ କାରକ ଭାବରେ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ କିପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରେ ତାହା ରେକର୍ଡ କରିବାରେ ସକ୍ଷମ।

11th July 2025	Orissa Post (Clip attached)	Bhubaneswar	5	NIT-R study calls for support systems for parents of kids with developmental disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

NIT-R study calls for support systems for parents of kids with developmental disabilities

https://www.orissapost.com/nit-r-study-calls-for-support-systems-for-parents-of-kids-with-developmental-disabilities/

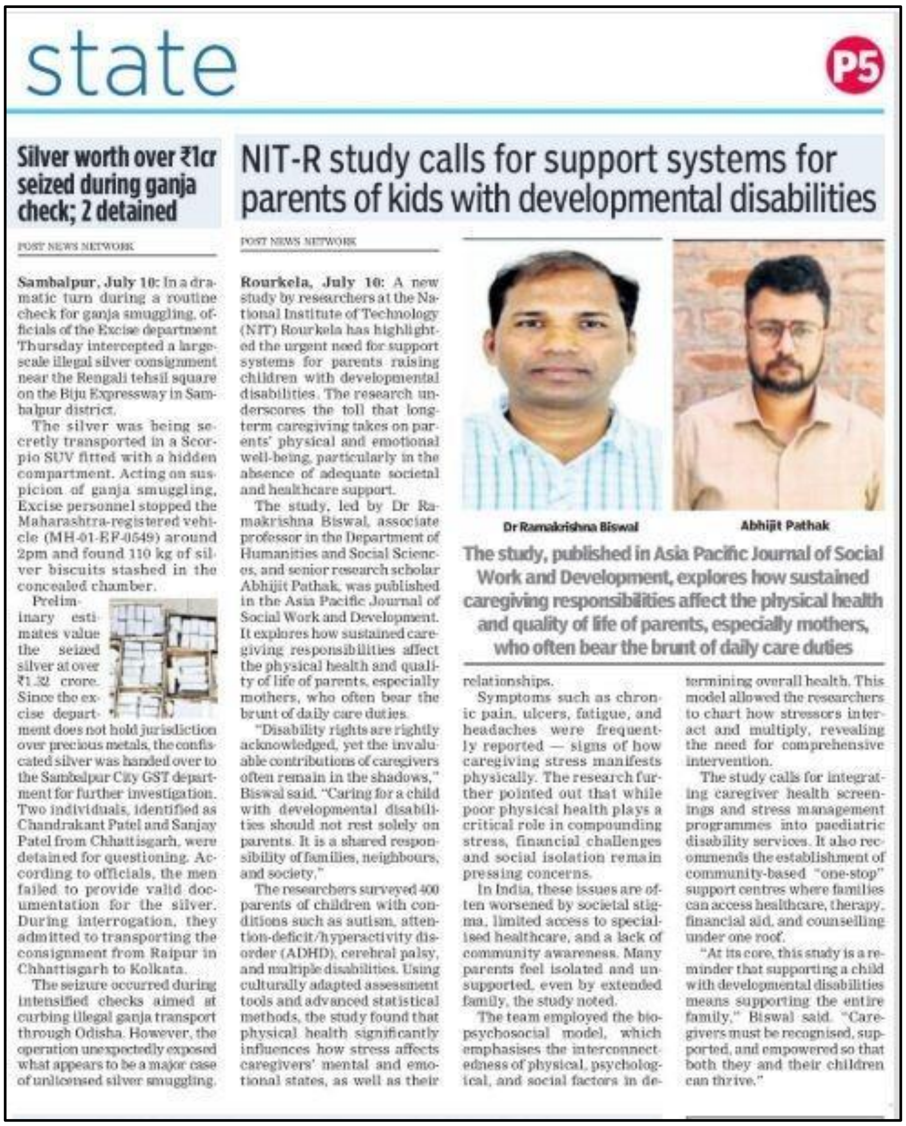

state

P5

Silver worth over ₹1cr seized during ganja check; 2 detained

POST NEWS NETWORK

Sambalpur, July 10: In a dramatic turn during a routine check for ganja smuggling, officials of the Excise department Thursday intercepted a large-scale illegal silver consignment near the Rengali tehsil square on the Biju Expressway in Sambalpur district.

The silver was being secretly transported in a Scorpio SUV fitted with a hidden compartment. Acting on suspicion of ganja smuggling, Excise personnel stopped the Maharashtra-registered vehicle (MH-01-EF-0549) around 2pm and found 110 kg of silver biscuits stashed in the concealed chamber.

Preliminary estimates value the seized silver at over ₹1.32 crore. Since the excise department does not hold jurisdiction over precious metals, the confiscated silver was handed over to the Sambalpur City GST department for further investigation. Two individuals, identified as Chandrakant Patel and Sanjay Patel from Chhattisgarh, were detained for questioning. According to officials, the men failed to provide valid documentation for the silver. During interrogation, they admitted to transporting the consignment from Raipur in Chhattisgarh to Kolkata.

The seizure occurred during intensified checks aimed at curbing illegal ganja transport through Odisha. However, the operation unexpectedly exposed what appears to be a major case of unlicensed silver smuggling.

NIT-R study calls for support systems for parents of kids with developmental disabilities

POST NEWS NETWORK

Rourkela, July 10: A new study by researchers at the National Institute of Technology (NIT) Rourkela has highlighted the urgent need for support systems for parents raising children with developmental disabilities. The research underscores the toll that long-term caregiving takes on parents' physical and emotional well-being, particularly in the absence of adequate societal and healthcare support.

The study, led by Dr Ramakrishna Biswal, associate professor in the Department of Humanities and Social Sciences, and senior research scholar Abhijit Pathak, was published in the Asia Pacific Journal of Social Work and Development. It explores how sustained caregiving responsibilities affect the physical health and quality of life of parents, especially mothers, who often bear the brunt of daily care duties.

"Disability rights are rightly acknowledged, yet the invaluable contributions of caregivers often remain in the shadows," Biswal said. "Caring for a child with developmental disabilities should not rest solely on parents. It is a shared responsibility of families, neighbours, and society."

The researchers surveyed 400 parents of children with conditions such as autism, attention-deficit/hyperactivity disorder (ADHD), cerebral palsy, and multiple disabilities. Using culturally adapted assessment tools and advanced statistical methods, the study found that physical health significantly influences how stress affects caregivers' mental and emotional states, as well as their relationships.

Dr Ramakrishna Biswal   Abhijit Pathak

The study, published in Asia Pacific Journal of Social Work and Development, explores how sustained caregiving responsibilities affect the physical health and quality of life of parents, especially mothers, who often bear the brunt of daily care duties

Symptoms such as chronic pain, ulcers, fatigue, and headaches were frequently reported — signs of how caregiving stress manifests physically. The research further pointed out that while poor physical health plays a critical role in compounding stress, financial challenges and social isolation remain pressing concerns.

In India, these issues are often worsened by societal stigma, limited access to specialised healthcare, and a lack of community awareness. Many parents feel isolated and unsupported, even by extended family, the study noted.

The team employed the biopsychosocial model, which emphasises the interconnectedness of physical, psychological, and social factors in determining overall health. This model allowed the researchers to chart how stressors interact and multiply, revealing the need for comprehensive intervention.

The study calls for integrating caregiver health screenings and stress management programmes into paediatric disability services. It also recommends the establishment of community-based "one-stop" support centres where families can access healthcare, therapy, financial aid, and counselling under one roof.

"At its core, this study is a reminder that supporting a child with developmental disabilities means supporting the entire family," Biswal said. "Caregivers must be recognised, supported, and empowered so that both they and their children can thrive."

11th July 2025	Sambad (Clip attached)	Bhubaneswar	7	ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗ ପିଲାଙ୍କ ଉପରେ ଗବେଷଣା	Odia	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak

ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗ ପିଲାଙ୍କ ଉପରେ ଗବେଷଣା

ସମ୍ବାଦ

ଦିବ୍ୟାଙ୍ଗ ପିଲାଙ୍କ ଉପରେ ଗବେଷଣା

- ପ୍ରଭାବିତ ହୁଏ ଅଭିଭାବକଙ୍କ ଜୀବନ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ
- ଏନ୍‌ଆଇଟି ଗବେଷକଙ୍କ କୃତିତ୍ୱ

ରାଉରକେଲା, ୧୦।୭ (ଇମିସ): ବାପା-ମା'ଙ୍କ ବିକାଶ ଓ ଜୀବନରେ ବିକାଶମୂଳକ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାଙ୍କ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ିଥାଏ। ଏମାନଙ୍କ ଯତ୍ନର ନିରନ୍ତର ଚାହିଦା ପିତାମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ତଥା ଜୀବନଯାପନର ମାନକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରିଥାଏ। ଏନେଇ ଜାତୀୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ (ଏନ୍‌ଆଇଟି)ର ହ୍ୟୁମାନିଟିଜ୍ ଓ ସୋସିଆଲ୍ ସାଇନ୍ସେସ୍‌ର ଆସୋସିଏଟ୍ ପ୍ରଫେସର ଡ. ରାମକୃଷ୍ଣ ବିଶ୍ୱାଳ ଓ ରିସର୍ଚ୍ଚ ସ୍କୋଲାର ଅଭିଜିତ ପାଠକଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଲିଖିତ ସନ୍ଦର୍ଭ 'ଏସିଆ ପ୍ୟାସିଫିକ୍ ଜର୍ଣ୍ଣାଲ ଅଫ୍ ସୋସିଆଲ ୱାର୍କ୍ ଆଣ୍ଡ୍ ଡେଭେଲପ୍‌ମେଣ୍ଟ୍'ରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି। ଗବେଷଣାବେଳେ ଡ. ବିଶ୍ୱାଳ ଓ ଶ୍ରୀ ପାଠକ ୪ଶହ ଜଣ ଅଭିଭାବକଙ୍କୁ ନେଇ ସର୍ଭେ କରିଥିଲେ। ଗବେଷଣା ସନ୍ଦର୍ଭରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରାଯାଇଛି ଯେ ମୌଳିକ ଆତ୍ମ-ଯତ୍ନ ଶିକ୍ଷା ଦେବାଠାରୁ ଆଚରଣଗତ, ସମ୍ବେଦନଶୀଳ ଅସୁବିଧା ପରିଚାଳନା କରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ପିତାମାତା ବିଭିନ୍ନ ପରିସ୍ଥିତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଥାନ୍ତି। ତେବେ ଏହାକୁ ଅନ୍ୟମାନେ ଅନୁଭବ କରିପାରନଥାନ୍ତି। ଏହି ଅଭିଜ୍ଞତାଗୁଡ଼ିକୁ ବୁଝିବା ପାଇଁ ଗବେଷକମାନେ ଅଟିଜିମ୍, ଏଡିଏଚ୍‌ଡି, ସେରେବ୍ରାଲ୍ ପାଲ୍ସି, ବହୁବିଧ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାମାନଙ୍କର ବାପା-ମା'ଙ୍କୁ ଅନୁଶୀଳନ କରିଥିଲେ। ଏନେଇ ଡ. ବିଶ୍ୱାଳ କହିଛନ୍ତି, 'ଅକ୍ଷମତା ଅଧିକାରକୁ ଠିକ୍‌ଭାବେ ସ୍ୱୀକୃତି ମିଳିଛି, କିନ୍ତୁ ସେମାନଙ୍କ ଯତ୍ନ ନେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ଅମୂଲ୍ୟ ଅବଦାନ ପ୍ରତି ଅଛପା ରହିଯାଏ। ବିକାଶମୂଳକ ଅକ୍ଷମତା ଥିବା ପିଲାଙ୍କ ଯତ୍ନ ନେବା କେବଳ ପିତାମାତାଙ୍କ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରିବା ଉଚିତ୍ ନୁହେଁ, ବରଂ ଏହା ପରିବାର, ପଡ଼ୋଶୀ, ସମାଜର ଏକ ମିଳିତ ଦାୟିତ୍ୱ। ବିଶ୍ୱସ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି ତଥା ସମାଜର ସମର୍ଥନ ଅଭିଭାବକଙ୍କ ଶକ୍ତି ଓ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି କରିଥାଏ। ଏଣୁ ସମସ୍ତେ ଏଭଳି ଅଭିଭାବକଙ୍କୁ ଆକୁଣ୍ଠ ସହଯୋଗ କରିବା ଶ୍ରେୟସ୍କର।

ROURKELA Edition
Page No.7 July 11, 2025

Online

10th July 2025	IANS	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.ians.in/english-wire-detail/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study--20250710162148
10th July 2025	The Times of India	Online	NA	Caregiving for speciall children often wears out mothers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhubaneswar/caregiving-for-spl-children-often-wears-out-mothers-study/articleshow/122371318.cms
10th July 2025	Express Healthcare	Online	NA	NIT Rourkela urges support for parents of children with disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://www.expresshealthcare.in/news/nit-rourkela-urges-support-for-parents-of-children-with-disabilities/449781/
10th July 2025	Outlook	Online	NA	Caregivers Of Kids With Disabilities Need Urgent	English	Archana Jyoti	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr.	https://www.outlookindia.com/healthcare-spotlight/care

				Support: Researchers			Abhijit Pathak	givers-of-kids-with-disabilities-need-urgent-support-researchers
10th July 2025	The Statesman	Online	NA	NIT-Rourkela researchers delve into support systems for parents of challenged children	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://www.thestatesman.com/india/nit-rourkela-researchers-delve-into-support-systems-for-parents-of-challenged-children-1503456259.html
10th July 2025	Curriculum Magazine	Online	NA	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://curriculum-magazine.com/nit-rourkela-research-calls-for-support-systems-for-parents-of-children-with-developmental-disabilities/
10th July 2025	The Hans India	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.thehansindia.com/life-style/health/disability-services-must-include-health-screening-stress-

								management-for-caregivers-study-986937
10th July 2025	Argus	Online	NA	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	Hemanta Pande	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://argusenglish.in/Odisha/nit-rourkela-research-calls-for-support-systems-for-parents-of-children-with-developmental-disabilities
10th July 2025	Daiji World	Online	NA	Caregivers of children with disabilities struggle with stress finds NIT Rourkela study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.daijiworld.com/index.php/news/newsDisplay?newsID=1285876
10th July 2025	Punjab News Express	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	NA	https://www.punjabnewsexpress.com/health/news/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study-291470
10th July 2025	Pro Kerala	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers:	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.prokerala.com/news/articles/a1651890.html

				Study				
10th July 2025	Dailyworld	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study - Agencies | Tech - Dailyworld.in	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://dailyworld.in/tech/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study-625453.html
10th July 2025	Sakshi Post	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.sakshipost.com/news/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-caregivers-study-427561
10th July 2025	The Mobiworld	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.themobiworld.com/Index/flowNewsDetail/id/11244423.html
10th July 2025	News Point	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.newspointapp.com/english-news/publisher-ianslive/health

				for caregivers: Study				/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/articleshow/14504820a87582260cd7c250fa254c674efd8ed1
10th July 2025	Social News XYZ	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.socialnews.xyz/2025/07/10/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/
10th July 2025	Lokmat Times	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.lokmattimes.com/technology/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/
10th July 2025	Hi India	Online	NA	Disability services must include health	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://hiindia.com/disability-services-must-

				screening, stress management for caregivers: Study				include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/
10th July 2025	Thip Media	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.thip.media/news/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/121014/
10th July 2025	Ten News	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://tennews.in/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study/
10th July 2025	New Kerala	Online	NA	Study Urges Health Screening for Caregivers of Disabled Children	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.newkerala.com/news/o/disability-services-include-health-screening-stress-management-caregivers-study-421

10th July 2025	Yug Marg	Online	NA	Visionary & effective administrator Er. Ravinder Singh Saini appointed new member, Punjab State Electricity Regulatory Commission	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.yugmarg.com/news/41553-visionary-effective-administrator-er-ravinder-singh-saini-appointed-new-member-punjab-state-electricity-regulatory-c.aspx
10th July 2025	India Education Diary	Online	NA	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://indiaeducationdiary.in/nit-rourkela-research-calls-for-support-systems-for-parents-of-children-with-developmental-disabilities/
10th July 2025	Odisha Diary	Online	NA	NIT Rourkela Research Calls for Support Systems for Parents of Children with Developmental Disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://orissadiary.com/nit-rourkela-research-calls-for-support-systems-for-parents-of-children-with-developmental-disabilities/
10th July 2025	Saransh Dainik	Online	NA	विकलांग बच्चों पर एनआईटी राउरकेला का शोध	Hindi	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://bit.ly/4lBvvy9

11th July 2025	India Today	Online	NA	NIT Rourkela study reveals health toll on parents of children with disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://www.indiatoday.in/education-today/news/story/nit-rourkela-study-reveals-health-toll-on-parents-of-children-with-disabilities-2753750-2025-07-11
11th July 2025	East Mojo	Online	NA	Study highlights strain on parents raising children with disabilities	English	Abhilash Singh	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://eastmojo.com/free-digest/2025/07/11/study-highlights-strain-on-parents-raising-children-with-disabilities/
11th July 2025	Mid-Day	Online	NA	Caregivers of persons with disabilities should be provided with support systems to ensure well-being: NIT-Rourkela study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://www.mid-day.com/lifestyle/health-and-fitness/article/nit-rourkela-study-highlights-importance-of-health-screening-stress-management-for-caregivers-of-persons-with-

								disabilities-23584195
11th July 2025	BioVoice	Online	NA	NIT Rourkela research calls for support systems for parents of children with developmental disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://biovoicenews.com/nit-rourkela-research-calls-for-support-systems-for-parents-of-children-with-developmental-disabilities/
11th July 2025	Namma Kudla English	Online	NA	NIT Rourkela Researchers Explore Support Systems for Parents of Children with Disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://www.nammakudlaenglish.com/nit-rourkela-researchers-explore-support-systems-for-parents-of-children-with-disabilities/
11th July 2025	Tri Cities	Online	NA	Study finds why caregivers of people with disabilities need a support system	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://tri-cities.in/study-finds-why-caregivers-of-people-with-disabilities-need-a-support-system/
11th July 2025	India 360 Report	Online	NA	अध्ययन में पाया गया कि विकलांग लोगों की देखभाल	Hindi	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://india360report.in/state/maharashtra/41699/

				करने वालों को एक समर्थन प्रणाली की आवश्यकता क्यों है				
11th July 2025	Janta Se Rishta	Online	NA	विकासात्मक विकलांग बच्चों के लिए सहायता प्रणाली जरूरी: NIT-R study	Hindi	Kiran	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://jantaserishta.com/local/odisha/support-system-needed-for-children-with-developmental-disabilities-nit-r-study-4141217
11th July 2023	Daily Hunt (Mobile)	Online	NA	NIT Rourkela study reveals health toll on parents of children with disabilities	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal and Mr. Abhijit Pathak	https://m.dailyhunt.in/news/india/english/indiatoday-epaper-indiatoday/nit+rourkela+study+reveals+health+toll+on+parents+of+children+with+disabilities-newsid-n672072066
11th July 2025	Investment Guru India	Online	NA	Disability services must include health screening, stress management for caregivers: Study	English	NA	Dr. Ramakrishna Biswal	https://investmentguruindia.com/newsdetail/disability-services-must-include-health-screening-stress-management-for-caregivers-study561406